

सुवर्णकुमारविवाहयुलगां॥

रंगधर्वविवाह॥

आशा अर्चन

2146

I

ASRA ARCHIVES

हुनमावदु २६ ॥ ॥ अथ गन्धर्व विवाह विधि लिख्यते ॥ न क संयीरिम
ॐ नायस्क पूजा ॥ थं कादिनयवदक याय ॥ द्विर्थं गमय स पूजायादुष्ठा
यमाल ॥ दू सलक दू यवदक यायमाल ॥ आयातु न दू सलक मीया
वक ॥ क मला ॥ ग ग गु न नाग ॥ हं ग म त रा ॥ हं ग म त रा हा या ॥ ला ह मा ला रु या ॥
म त रु ना उ वा व लि र ग म उ जा स गु णी त वृ न्दि का वा य ॥ थ रु वा या व ॥ य ऊ मा
न स्य ॥ ॐ गृ हा दि ॥ य ऊ मा न स्य क न्या स व र्णु क मा न वि वा हा दृ ग ग ग गु न ना
ग म नु ण वा क्य ॥ आ या र्थ्य वि धि थुं क म ला पू जा या य ॥ धू प दी य जा य स्त न

धूनक ॥ वाक्त्रादि पूजनं ॥ हस्तार्चयन् न धूपदीपानं धूनक ॥ अथ गन्धर्व वि
॥ ॥ अदिमार्थं कादिस्थं लासालं रुया व स्वस्ति क स सी ने ॥ गिरि शं रु ने ॥
निर्मल न या य ॥ थं का दि आ दि न स्था न रा न क ॥ म गु ल सा रु य र्थं धूनक ॥
म गु ल वि स र्ज न ॥ ॥ थ न म त रु ना उ वा स गु णी त वा य ॥ म त वृ न्दि का वा य
गु १०८ ॥ ॐ स्वस्ति वा क्य ॥ ॥ अदि मा वा या ला हा नि स र्ज न स्वस्ति क या
या व ग त वृ न्दि का जा न क न ॥ द व वा क्त्रा दि द क्षि ण दा न ॥ वा च न का य ॥ अ
र्घ या रा या ल र व न अ रि ष क च न्द न सि न्धू न स गु णी र्वा द वि य ॥ स रु आ न ति य

मिच्छा। मासद्येयेयाचकावलासालायनं। कीमानीयासमयचयनथियकावलास
वृद्धिकादिचक। दसत्रजानकंयचकलंककायमाल। धरुदसत्रयाविधिः।
। अथसन्निदुदुंठिसिनद्यटितयक। वक्राजुदकलनयकयवीपील
क्षीनागयागवलिदुरवाविरवादिवाय। यागकालसं. न्नायजुगिगिरुगिगि
लसायावदुकाय। अथार्थवक्राचनयाचक। लिमियासयूवाकूठ। म्वातमास
द्विदकलचक्रकंचलानं। धरुलिमियासगयाव। वक्रासर्थकादिसेननिर्मकुनादि
अग्निनारुनका। सगुगलिमिनत्वाय। सूकाय। चन्दनसिद्धनसगुगानीदीद। अग्नि

लिनत्वाय। सरुअत्रतियमिच्छा। कलगसमसुहिनंस्वानतनक। अथचन्दस्वानय
क्षायवीतपूष्यधूपदीयजायकां। अथगन्कादि। अथार्थसंधायनं। यदयक
गीनागयाथव२थयसतं। कलगथव२दिगसतं। वीवत्सादियूर्वादिदुरुनकं
मूर्धदुर्धनं। धरुकाथनंविधि। । रदिमायार्थकादिस्यलासालावयक्रमगु
स२ययायंकुलिसस्यक्तिकंमानं। निर्मकुनवलि। वक्रादिस्वानतनं। सागयर्थः
कंधूनक। मथरुमाउयासगुगलिविद्यानत्वाय। चन्दमगुलनानत्वाय। सा
काय। यकननं। ललाटदुदिरुकीजानीपादी। कानर्थनं। धंकागुलाकागु

। कालरा । ॐ दीर्घायुस्त्वा । नदिमायावन्दनसिन्दूरसगुणगीर्वादविय । सरुआ
नित्यनित्य । मासधौतयायक । लासालायकावस्वस्तिकसमानेक्षयायक । न
दुपूजायाकावययमगुलमुकुलनकाय ॥ लसियायक । मोउदूयक ।
थकादिस्तंलासालायकावस्वस्तिकसमाने । वंसायकं । निर्मकुनवलि । उक्ता
दिस्वानननक । जायमगुलमोय । अमृगम्भदि । मरुताउयानत्ताय । स
गुणसिन्दूरयकासिगलठ । धरुदकास्तंताय । सिन्दूरयकासिनसेयकवमूलका
नादिननित्यक । सिन्दूरमूदनत्ताय । सिन्दूरमालकाज्जगलतयावसिन्दूरकाय ।

सिन्दूरगौरनसमूद्रकर्मसु । ॐ स्तंयविष्टदा । सिन्धुमूद्रकाय । यमादपिटिनिसला
वसकागरवलशालरुनिनिगनवृद्धिकाधरुलवकाय ॥ गनवृद्धिकानकारयायक ॥
ॐ सरुसावि । अलिनिनत्ताय । ॐ नमः । गुरुवायुव । पिटिलिनत्ताय । ॐ प्रजायतन
। रुमानगयक । ॐ गववायु । अर्घयागयालखनकाय । ॐ दवस्यत्वा । लूयतन
नयक । ॐ हिनुधगर्ह । यन्दनसिन्दूरसगुणगीर्वादविय । वन्दावनकुय । वास
नददिक्षदाने । अगीर्वाकविय । नदिमयार्थकाठिनदामयार्मपूजारविआयय
कंताथ । नदिमायासरुआनित्यनित्य । मासधौतयायकलासालायकाव । कतिन

मयावरुणिनिवजिनक ॥ अंगुलमयाव ॥ अथकलंककाय ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥
 याय यथाविधानं ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 अजायसी श्रीरुलपूजायाय ॥ अलासतस्य ॥ निवर्तकाल्य ॥ स्नानचन्दनयज्ञायवीरपू
 ष्यधूपदीपजायस्तोत्र ॥ अंगुलमयाव ॥ श्रीरुलपूजायाय ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 य ॥ समिधसह ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥ **वाङ्म** ॥
 सिद्धयज्ञायवीरपूष्यधूपदीपाय ॥ जायस्तोत्र ॥ अंगुलमयाव ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥

सर्वलक्ष्मी २

॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 नविष्णुसंभवात्समं देवकी देवी तुती स्वाहा ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 निपूजायाय ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 नादकतेन दातव्यं ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 एतिगृह्णतु आत्मजा ॥ मयादत्तं सुगुह्यं हिः कन्याधुरगुह्यं हिता ॥ तस्मिन्पुत्रं देवदा
 कं ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥
 ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥ **वृद्धार्जुन** ॥

२

दानीकुसुममंदसंपदय ॥ दूधधननखधनकायक ॥ ॐ भूगयत्तामर्धवत्रुणाददा
 कुसासुतत्वमसियायुदीनेदिमयामर्धपतिगृहीतं वत्रुणाददा
 सामुतत्वमसियः ॥ पारणादोययदिमयामर्धपतिगृहीतं वदस्यनयत्तामर्धवत्रुणाः
 दंदाकुसासुतत्वमसीयत्वन्दोययदिमयामर्धपतिगृहीतं यमायत्तामर्धवत्रुणाददा
 कुसासुतत्वमसिदयादोनेदिमयामर्धपतिगृहीतं ॥ ॐ कादात्तामादात् ॥ ॐ दीकामय ॥
 मति ॥ दक्षिणा ॥ वाक्मनयजमानयातज्जुनीदीर्घ ॥ ॐ यनपीरुलवधर्न ॥ आदूति ३
 ॥ पूर्ण ॥ कथायुवनस्युगा ॥ ॐ ॥ हृक्लीनमंसुलदायककुवाको ॥ लाहातसवि

स्यितयारुन ॥ ॐ वाक्मनयस्ववसतयावसिनेकातयक ॥ ततोलाजाहर्म ॥ अंला
 सतस्यसमिधसदुद्युतसहित ॥ ॐ भूर्यमनंदवकन्यानिमयकृत ॥ ननार्थमादवः ॥
 तामुधुमुमायतयत्वाहा ॥ ॐ दमनयद्युतन ॥ ॐ ॐ यनार्थपदुतलाजानावयक्ति का
 ॥ आयुषाननुमयतिनधतात्तायाममस्वाहा ॥ ॐ दमनय ॥ ॐ ॐ मीलाजानावया
 म्भरणीममिधीकनर्तव ॥ ममकुशयसंवदनंतदग्निननुसत्यामिय ॥ स्वाहा ॥ ॐ दम
 नय ॥ लासालायहाववायुयसमतुरुताठयानत्वाय ॥ मासधुंयायक ॥ ॐ आः
 माहमदुमस्मासमेमेवत्व ॥ ॐ निभारव ॥ अरितिष्ठवतन्वताववाधस्यपुतनायत

लासालायदावन्नीमनसज्जुगिनित्वाय ॥ ॐ नमः ॥ सुवा ॥ लासालायदावन्नी
 मयकागसपसादपिटिनीनत्वाय ॥ ॐ यजायतन ॥ लासालायदावन्नीमयकागस
 हासानगमयक ॥ ॐ तववाय ॥ यरुसिहासनसतयावलाजीहामयायक ॥ मासः
 धर्तयायक ॥ अगिनित्वाय ॥ पिटिनीनत्वाय ॥ हासानगमयक ॥ पुनलाजाहामं ॥
 मरुताउयानत्वाय ॥ मासधर्तयायक ॥ सकयथकाय ॥ अभिकुण्ठयार्थविः
 नयपुवासनकसजाकथाय ॥ ग्वयतय ॥ वरुस्यवन ॥ ॐ एकमिधविष्कृत्वािनय
 तु ॥ ॐ धर्तुर्कमिधविष्कृत्वािनयतु ॥ ॐ गीगियायसावायविष्कृत्वािनयतु ॥

ॐ यत्वाग्निमापारवायविष्कृत्वािनयतु ॥ ॐ यधुपगुसाविष्कृत्वािनयतु ॥ ॐ
 धर्तुसाविष्कृत्वािनयतु ॥ ॐ सखेसकयदाथरुवमानपरातवविष्कृत्वािनय
 तु ॥ थरुसकयद ॥ अगिनित्वाय ॥ धुवदर्शनं ॥ वंसायाव ॥ ॐ धुवमसिधुर्वर्त
 यग्निमिधुर्विष्मिमिधिमर्द्धादावृहस्यति ॥ मयायसापजावतिगतीजीवनमद
 ॥ नमः ॥ कनन ॥ खदाधायक ॥ आगयकागसपसादपिटिनीनत्वाय ॥ हासानगमः
 यक ॥ लाजाहामं ॥ दृष्टीनक्तकाकायक ॥ महाद्यादुतिनआदुतिविय ॥ ३ ॥
 यरुसिहासनारुनर्वदावनकुग ॥ वक्रादिआगगतय ॥ अगीर्वदधरुआनतिय

[illegible]

॥ ॐ उमथं ॐ हियाता उ लायकं ॥ ॥ ॐ हियतासि वक्रा वक्रा यातगा अ
उ. धमा लको. अष्टकलनी. श्री. लक्ष्मी. यदयदनी. नागयो. अवा दक सना वः
पुसा दयि तिनी. ॐ नायको उ. पनी तना न. वक्रा यय सला या. घटि नात. कयि अत म
लको. पा १ पूल. हंग ननु. हंग नगा हाया. गृय थालं. लूयत. लूयकि. धवति अंगुळ
अंगुलि मालको. मोसि मालको. या १ सिंत. काय खखिया तमालको. सिजल या वीदिः
या १. अर्यया य. नाय मालको. हनि वकि नक यात. सिंदूर मालको. नाय. याता यः
ॐ ताल मालको. यजम कामालको. पूजा रत. या ८ साइइ. या १२ सगु वधलि. या ८

[illegible]

वर्षान्युधियाः ॥ ४ ॥ ॐ अनिलाय नमः ॥ ॐ विष्णुर्भुवः विश्वानि पृथिव्यः
 धार्मिष्ठानि विमलमनसा ॥ ५ ॥ ॐ अस्मिन् रायदुर्ग नरं सधस्यं विवकुमा
 लम् ॥ ६ ॥ ॐ अनिलाय नमः ॥ ॐ दिवा वा विष्णु उत
 वा पृथिव्या महा वा विष्णु उत नान्म निरुत ॥ ७ ॥ ॐ अहिम्ना वसुधैव कु
 लु दक्षिणा दानं स व्याधिषू वत्वा ॥ ८ ॥ ॐ योगेश्वराय नमः ॥ ॐ योगदिष्णुम्
 वगवीश्वरं मृगमनरीमः कू वनागिनिष्ठाः ॥ ९ ॥ ॐ अस्मिन् रायदुर्ग नरं सधस्यं विवकुमा
 लम् ॥ १० ॥ ॐ अनिलाय नमः ॥ ॐ विष्णुर्भुवः विश्वानि पृथिव्यः

सिविष्ठाः ननु स्याद्विष्ठाः स्युः सति विष्ठादुवांसि ॥ वेभ्रवमसि विष्ठात्वा ॥

॥८॥

अन्वष्टकावमुवृद्धेचगयायादक्षयानिमातुःआहुंयुथव्वयातदचत्र
यतिनामः॥ वायुयुगं॥



ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ अथ गया विधिः ॥ तद्यथा ॥ ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ अथ गया विधिः ॥ तद्यथा ॥
 ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ अथ गया विधिः ॥ तद्यथा ॥ ॐ नमः श्री कृष्णाय ॥ अथ गया विधिः ॥ तद्यथा ॥
 ॥ विधिः ॥ स्त्रियो ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥
 स्नानमादत्तः ॥ पितृणां विष्णुलाकाय कुकि मूकि यमि द्वयः ॥ ॐ त्रियः ॥ ॐ त्रियः ॥
 अहं तम आ वन्दनं नमः ॥ अहं तम आ वन्दनं नमः ॥ अहं तम आ वन्दनं नमः ॥ अहं तम आ वन्दनं नमः ॥
 स्नानमादत्तः ॥ तिलादकं तस्मै स्वधायितव्यं पीन्यानीति यिदुः ॥ नववा ॥
 तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥
 कंकर्ष्यः ॥ ॐ अथ तीर्थयात्रा निमित्तकया वन्दनं ॥ अहं तम आ वन्दनं नमः ॥ ॐ त्रियः ॥

कल्प ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥
 कल्प ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥
 तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥
 कल्प ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥
 तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥
 कल्प ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥
 तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥
 कल्प ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥
 तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥
 कल्प ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥ अथ कवीत्यायावे ॥
 तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥ तद्यथा ॥

का कसम वलनदी यदद्या लिमि अथ ७ ॥ ॐ अमक (गस्ता) माता माता मदी यमाता
 मदी वृद्ध यमाता मदी ना अमकामक दवी ना य तत्त्व विमुक्ति काम ४ यत गिला
 योग या ध्रुव मरु कविद्या ॥ ॐ तिम कल्या ॥ धा उ ग दे व र्ण ध्रुव या च्छ्रुति क
 रु या ता क कुर्या ७ ॥ दक्षिण दो न य य र्ण या च्छ्रुति विधाय तद्वि दक्षिण ड य वि
 ध्रुव ता य स म धा दक्षिण मखा द कुर्य ध्रुव ता क य वा ला न व ॐ त्या दी त्व र्ण मि
 त्य र्ण य च्छ्रुति लिखि र्ण य ० त्वा त य क (ग) म क हिला द का अलि द न वृ य मा वा रु
 र्ण कुर्या ७ ॥ तत्त्व न ता नि या या नि दी नि ॥ ॐ धिगा दि त्या न म ॐ त्व न न क म ध
 य (ध) य या न धिगा दी न र्ण य ७ ॥ ॐ आव द न्व य र्ण क दे व धि यि ह मा न

वा ४ रु य नु पि त न ४ स च्छ मा रु मा ता म हा द य ४ अ ती त क ल का दी ना स फ दी य नि
 वा मि ना ॥ आव द रु वे ना ला का दि द म यु ति ला द क ॥ ॐ ति य च्छ्रु व द अ लि वृ य
 मि लि ग यि ता या वा रु र्ण क त्वा ॥ आ धा म क (ग) रु यि त वा म क (ग) म (ध) य ४ यि
 ४ स (ध) ति ति रु ल म धू या वे न रु त मि र्ण या य सा द न्य त म यि र्ण यि रु द त्वा ॥ मा
 ता म हा दि य र्ण न का द (ग) या य थ दक्षिण द य ७ ॥ तत्त्व दक्षिण त ड य वि
 ध्रुव म मू ला दक्षिण य न क र्ण ना स्त्री य ॥ ॐ क य वा ल ॐ त्या दि ध्रुव ति मि त्य
 र्ण य च्छ्रु व द य ० त्वा स क हिला द का अलि द न वृ य मा वा रु र्ण क त्वा य च्छ्रु
 व द य ७ ॥ ॐ वृ य र्ण व य र्ण क मि त्या दि स तिला अलि द न वृ य र्ण य च्छ्रु या वा
 आ

हर्नकृत्वा । उँ पितापितामहोँ वतथे वयपितामहा ॥ मातापितामहीरेँ
व तथे वयपितामही ॥ मातामहसुतिता वयमातामहकादय ॥ तर्थाँ पि
धुमया दली अकृयमयतिष्ठती ॥ तिथीवालिकमनुसूचार्थ ॥ तिलघृतम
धूजलयतमूष्टिमिलियकु कृतं मिलितं भा द्वादशैकपिर्दया ॥
ततः ४ धातुगाकम् ॥ तद्यथा डनविंशतिदास्यमानपिण्डुस्तानानियथादकि
र्णकृतानियत्यर्कयथादकिर्णयश्च गयवालिषा तयपूर्ववदद्विषय
कृत्वा नयं धृत्वा । उँ अस्मत्कृतमृगायच गतिथर्थां न विद्यते । आवाहयिष्य
तान् सन्वान् दकृष्टृ तिलादकै ॥ तिथीवालिकमर्कवास्ति तद इष्य ॥

तिलका ३२ लिनातावाक् गन्वादि विवच्य शुद्धिदवतायदधातुगी क्रियुक्त
दातदानदवतामर्कं लतामपिर्दया ॥ उँ आवक्ष्मस्मययक्तदवविषिर्क
मानवा ४ हयानुयिपितव ४ सच्चमाह मातामहादय ४ अतीतकृतकाटीना
सुफदीयनिवासिना । आवक्ष्मदुवनोलाका ॥ दमसु तिलादकै ॥ तिथु
वैवदकवारं ततु तिलादका ३ लिदत्वा मूलादित ४ पिण्डु न दद्या ॥
तत्कम ४ । अस्मत्कृतमृगायच गतिथर्थां न विद्यते । तयोमृद्ववत्तथ
य ॥ दयिर्दया मर्क ॥ १ ॥ उँ मातामहा कृतयच गतिथर्थां न विद्यते
तयोमृद्ववत्तथ ॥ दयिर्दया मर्क ॥ २ ॥ उँ वन्धवने कृतयच ग

तिथिषां न विद्यत । तेषां मूढवत्त्वार्थं यः संमैषिणुं नमामाह ॥ ३ ॥ अजातदत्ता
 थकवि ७ थकवगदृषयीसिता १ तेषां मूढवत्त्वार्थं यः संमैषिणुं ददामाह ॥
 ४ ॥ अग्निदाहं मृताय च सिंहाय च रुताय च । दक्षिणि ४ गुणिनि चोपितस्य
 ४ पिणुं ददामाह ॥ ५ ॥ अग्निदग्धाय कविर्नग्निदग्धस्यैव विद्युच्चिरता
 यवतस्य पिणुं ददामाह ॥ ६ ॥ हि वध्यवन्मोनि वनयद्रुक्ष हस्यारुता ॥ स
 तापतयिषा वा धृतस्य ४ पिणुं ददामाह ॥ ७ ॥ उवाच वचान्मवा मित्रको वसु
 मन्त्रय रुता १ तेषां मूढवत्त्वार्थं यः संमैषिणुं ददामाह ॥ ८ ॥ अनकयातना
 र्मका १ यतला कश्च ३ थगता १ तेषां मूढवत्त्वार्थं यः संमैषिणुं ददामाह ॥
 ९ ॥ दधनमृताय च विषगुरुताय च आत्मापद्यातिनाय च तस्यः पिणुं ददामाह ॥ ४

१० ॥ अनकयातनार्मका यतला कश्च ३ थगता १ तेषां मूढवत्त्वार्थं यः संमैषिणुं
 ददामाह ॥ ११ ॥ उवाच वचनं समस्तस्य यातना सुवयसि ता १ तेषां मूढवत्त्व
 र्थं यः संमैषिणुं ददामाह ॥ १२ ॥ उवाच यथा निगताय च यदि कीटस्य वीर्यया
 १ अथवा वृक्षयानिष्ठा तस्य ४ पिणुं ददामाह ॥ १३ ॥ उवाच नवमस्य च
 सुवर्ण १ अनकर्म १ मानस्य १ इन्द्रियस्य १ तस्य ४ पिणुं ददामाह ॥ १४ ॥
 उवाच विद्वत्पुत्रमिष्टा ४ पितृवा वा न्निवा मृता मृता अमृता यवतस्य ४
 पिणुं ददामाह ॥ १५ ॥ उवाच कविप्रतप्यं वरुणं पितृवामम ४ तस्यैव
 ह किमाया कि पिणुदानं न सर्वदा ॥ १६ ॥ उवाच वा अवा न्निवा य १ अज

ननिवाधवाः तथापि पुमया दक्षा अकथ्ये मयतिष्ठती ॥ १० ॥ ॐ विरुवं
 समुतायवमारुवं ॥ यथमुताः पुनश्च सुववधनीयवा न्यवाधवामुताः
 यमं कूलकपिपुंथुं पुनदाववि वक्ति गोः क्रियालायगतायव जायन्ध
 यद्वदसुध विन्याजामगको ग्यल्लाताल्लाताः कल्लमम । तथापि पुमया
 दक्षा अदीयं मयतिष्ठती ॥ ११ ॥ आवद्व ॥ ययिरुवं ॥ जातामाहुसुध
 वं गुरुवामदीयाः कल्लद्वययममदायुरुहत्यासु धिवा धितसकाश्र ॥ मि
 तागिमस्यः यदा वध्वृद्धदृष्टाश्च दृष्टाश्च कृतायकावाः ऊन्मानुवयमम
 सनरुताः तस्यः स्वधायिपुमदंददामि ॥ १२ ॥ ॐ तियति ॥ ॐ कावध

पृष्ठ ४

चमयसथमक धितयमाका नून विगतिपिपुंथुं यत्वं कंदयादिति ॥ ॥
 मुधा उगमं कृणुयमासीयो ॥ ॐ अकल्लमुतायाश्च गतिर्यामान विद्य
 त ॥ आवारुयिधताः सच्चोदहृष्टतिलादके ॥ माताहकल्लयाश्च गतिर्या
 मानविद्यत ॥ आवारुयिधताः सच्चोदहृष्टतिलादके ॥ वध्ववर्गकल्लयाश्च
 गतिर्यामान विद्यत ॥ आवारुयिधताः सच्चोदहृष्टतिलादके ॥ ॐ तिगा
 पूर्वव ॥ यत्वं कमावायुस्यच्चोदवतायददवतामस्यच्च ॥ ॐ आवद्वसु
 मयथेन वधिपिरुमानवाः रुयानुयितवः सच्चमारुमातामदादयः ऊ
 नीरकूलकाटीनीसफदीयनिवासिनी ॥ आवद्व सुवनाल्लाका ॐ दमसु

५

निलादके॥००॥तिमन्त्रायैयूध्ववदकवारैतगनिलादकाङ्कलिदत्ता॥०॥
 अस्मत्कूलमृतायाश्चगतिर्योसान्नविद्यतं।तासामूध्ववपार्थय००॥मैयिर्धु
 ददाम्यहं॥१॥ॐमातामहकूलयाश्चगतिर्योसान्नविद्यतं।तासामूध्वव
 पार्थय००॥मैयिर्धुददाम्यहं॥२॥ॐबन्धवानकूलयाश्चगतिर्योसान्नविद्य
 तं।तासामूध्ववपार्थय००॥मैयिर्धुददाम्यहं॥३॥ॐभूजातदन्ताया०
 काश्चिद्याश्चगर्ह्ययीतिता०।तासामूध्ववपार्थय००॥मैयिर्धुददाम्यहं॥
 ४॥ॐअग्निदग्धाश्चयाकाश्चिन्नाग्निदग्धास्तथायवो।विद्यञ्चोवरुताया
 श्चतस्य००॥मैयिर्धुददाम्यहं॥५॥ॐअग्निदारुमृतायाश्चसिंहयोधुरुताश्च

या। दंष्ट्रिः ४ सिंहरिः ४ चोयिताः ४ यिर्ददाम्यहं ॥ ६ ॥ ॐ उदधनमृतायाश्च वि
षममृताश्च यो १० आत्मा यद्यतिनायाश्च तस्य ४ यिर्ददाम्यहं ॥ ११ ॥ ॐ अथ
वल्मीकिवनयासूयादुधया रुता ४ रुतयुतयि ११ च वतस्य ४ यिर्ददाम्यहं ॥
४ ॥ ॐ वीरववाधवातिमिमाकावसूयवयानता ४ तासामूद्ववल्मीक्य ४ मयि
र्ददाम्यहं ॥ १० ॥ ॐ अनकजातनासूयानीतायमसायके ४ तासामूद्ववल्मी
क्य ४ मयिर्ददाम्यहं ॥ ११ ॥ ॐ नवकसूयसमसूयाननासूया ४ स्मिता ४ ता
सामूद्ववल्मीक्य ४ मयिर्ददाम्यहं ॥ १२ ॥ ॐ यद्युथानिगतायाश्च यद्युकिकीन
सवीसूया ४ अथवा वृकथानिष्कातास्य ४ यिर्ददाम्यहं ॥ १३ ॥ ॐ जात्यवस
४ १ अनकजातसूया ४ यतलाकीयोगता ४ तासामूद्ववल्मीक्य ४ मयिर्ददाम्यहं ॥ १४ ॥ ४

दुष्टेषु मन्त्रा ४ स्वन कर्मणा । मानुर्दं दल्ल रं यासां तास्य ४ पिण्डं ददाम्यहं ॥ १४ ॥
ॐ दिव्ये कवि कर्मिणा । मातवा वांश्च वा दय ४ मृता अमंस्तु ताया धृतास्य ४ पिण्डं
ददाम्यहं ॥ १५ ॥ ॐ याश्चा छि ३ युत वृथं न बलं कमातवा मम । सर्वे सु किमा
यामु पिण्डान न स वेदा ॥ १६ ॥ ॐ या वांश्च वा अ वांश्च वा या न्य ऊ मनि वांश्च वा
४ तासां पिण्डमया दत्ता अकथं मयतिष्ठतां ॥ १७ ॥ माह वै ॥ मृताया च यिरु
वै ॥ यथा मृता ४ याम कूलं लफ पिण्ड ४ यन्मदा वा विवर्जिता । किं या लाय ग या
थ यास्यन्ता ४ यद्ग वतथा । विनूया अमग को यि रूता रूता ४ कूलं मम । तासां पि
ण्डमया दत्ता अकथं मयतिष्ठतां ॥ १८ ॥ ॐ आवद्म ॥ या ४ यिरु वै ॥ ज्ञाता

मरुसुथा वै ॥ रुवाम दीया ४ कूल दय मम दासि रूता रूत्या सुथे वा गित सं व
काश्चामि गालि सत्वा ४ यं व द्य वृक्षा दृष्टा दृष्टा दृष्टा यो को वा ४ ऊ म्मा कन
यामम मरुता धृतास्य ४ स्वधा पिण्डमहं ददामि ॥ १९ ॥ ॐ तिय रित्वा कतु यमा
॥ कानून विंति पिण्डमं यत्कं यति मका कंद या ॥ ॥ तत ४ सर्वेषु पि
ण्डेषु तिलं कूलं यत्पुं या नुं ॥ यद किं वा वरु यं य विध वनं क रं च ॥ तनु म
नु ॥ ॐ यं व या य वा सां सा स ना ध या या ध्या सा स्वा र्पं क वा वा रु नी ना ध्या वा
रु ना रूथ नुरु वक्त ४ रूथ नुरु वत्त रूफं तं गगानं कं यं गगानं रि तयं यनी
वा या मधु मती विमा ४ सा धा यिरु रूता मा रूत्या २ मृतिं द्वा य ना आ धा द वी वरु

यासुर्ययनुहयातलुयातलुयातति॥तत४यलियह॥ ॥ ॥
 २यमुयि(धु)मेयादल्लसुवहसुजनादन।दहिदेवगयागीयतस्मि
 ननृतेतुत॥भवयात॥ ॥नययि(धु)मेयादल्लतवहसुजनादन।गया
 र्थेत्वयादयामय्युयि(धु)मृतामयि॥धवत॥ ॥लामेलमनवसयहसु
 न।हुठव।जनादनसकसस्यताथ॥ ॥जनादननमसुखी।नमसुयिह
 युयि(धु)।यिहयातनमसुखी।नमसुमुक्तिहताव॥गयायातवृथल।स्वय
 मवजनादन॥लकीकार्कनमसुखी।नमसुयिहभाकद॥गयायातवृथल
 कार्कसुयतवमनगया॥युलुनीकार्कसुयचस्वनेयावृजनादनकेव

विष्णु
 ॥ ॥ॐ॥नमोमेलासनकार्किकयवक्रिगुयार्कवजनीसगलध्ववापी।
 कोशमल्लेकवसंलीकवकध्यानायादनमिववहुदसमुक्तिहता॥द
 धीवियदकर्णुयदार्णीधाठायदीक्षया॥ ॥ ० ॥

नमोवृक्षगयदेवायंगोवास्तगाहितायच॥जगदितायकृष्णायंगोविन्दायनमो
 नमः॥नमोस्वनायमहस्वमृतेयमहस्वयादाक्षमृगारुहवाहवेमहस्व
 नाम्नियुख्यायशास्वतेमहस्वकीटीयुगधारिणोनमः॥





